International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2022; 4(1): 15-16
Received: 09-11-2021
Accepted: 15-12-2021

शालिनी पाण्डेय
प्रशिक्षक, फैशन डिजाइनिंग, प्रौढ एवं सतत शिक्षा विभाग डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
शालिनी पाण्डेय
प्रशिक्षक, फैशन डिजाइनिंग, प्रौढ एवं सतत शिक्षा विभाग डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

ग्रामीण परिवेश के युवाओं में खादी परिधान के प्रति जागरुकता का अध्ययन

शालिनी पाण्डेय

सार
प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत ग्रामीण परिवेश के युवाओं में खादी परिधान के प्रति जागरुकता के अध्ययन के लिए 18–30 आयु वर्ग के युवक युवतियों का चयन किया गया। चयनित प्रतिदर्शो से प्रदत्त संकलन स्वनिर्मित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के द्वारा किया गया है। प्राप्त परिणाम के आधार पर स्पष्ट हैकि 72: ग्रामीण युवको के द्वारा आधुनिक परिधान के प्रति रुचि प्रदर्शित की, जबकि 14: ग्रामीण युवको के द्वारा खादी परिधानों के प्रति रुचि दिखलायी। इसी प्रकार 84: ग्रामीण युवतियों के द्वारा आधुनिक परिधान के प्रति रुचि प्रदर्शित की, जबकि 16: ग्रामीण युवतियों के द्वारा खादी परिधानों के प्रति रुचि दिखलायी गयी। प्रस्तुत अध्ययन परिणाम विभिन्न विद्वानों द्वारा पूर्व में किये अध्ययन परिणामों की पुष्टि करता है।

कुटशब्दः ग्रामीण परिवेश, खादी परिधान, प्रति जागरुकता

प्रस्तावना
भारत में खादी को सभ्यता के आरंभ से ही व्यवहार में लाया जा रहा है। आजादी की लड़ाई में, महात्मा गांधी ने ग्रामीण स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता के लिए खादी को बढ़ावा देना शुरू किया। इस प्रकार, यह स्वदेशी आंदोलन का अभिन्न अंग बन गया। यही कारण है कि आजादी के सात दशकों के बाद भी, भारतीय समाज में खादी की एक खास स्वीकृति है। 1948 में, भारत ने अपने औद्योगिक नीति प्रस्ताव में ग्रामीण कुटीर उद्योगों की भूमिका को मान्यता दी। 1949 में, श्री एकम्बरनाथन ने एम्बर चरखा का आविष्कार किया। अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड की स्थापना जनवरी, 1953 में सरकार द्वारा की गई थी। 2019 में यह बताया गया था कि 2018–19 से पहले 05 साल की अवधि में भारत में खादी की बिक्री में की वृद्धि हुई है।
खादी में डिजायनों में खूबसूरती की नई संभावनाएं नजर आने लगी हैं. इसे देखते हुए अब लग रहा है कि भारत में खादी के वस्त्रों का फैशन भी आने वाले दिनों में चल निकलेगा। फैशन को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है। ये निम्नलिखित है :– वास्तविक फैशन, उत्कृष्ट फैशन, लोकप्रिय फैशन। फैशन को निम्नलिखित कारक प्रभावित करते है यथा :– 1–वातावरण 2–संस्कृति 3–मीडिया व संचार 4–व्यक्तित्व 5–परिवर्तन तथा नवीनता 6–अनुरुपता व पृथकता की इच्छा 7–सुख व सन्तुष्टि की इच्छा 8–स्वरुप की चेतना 9–अहम का विस्तार 10–आकर्षण का केन्द्र विन्दु 11–पैसा कमाने की लत (धुन) 12–अविष्कार 13–आवश्यकता 14–उद्योग प्रतियोगिता। फैशन के बाधक तत्व : फैशन समाज में फेल हुआ ऐसा तथ्य है जो प्रभावित होता है तथा उसके प्रसार में अनेक बाधायें भी उत्पन्न होती है जो इस पर कुछ आशिंक प्रभाव डालती है। इस प्रकार यह अनेक कारणों से वाधित होता है, जिनमें से कुछ प्रमुख बाधक तत्व निम्नलिखित प्रकार है : 1–रुढ़िवादिता 2–धन एवं बजट 3–अशिक्षित समाज 4–नैतिकता का अभाव 5–परिवर्तन विरोधी विचारधारा 6–परम्परा 7–विचारों में सामंजस्य न होना 8–विवेकपूर्ण चुनाव 9–समूह द्वारा न ग्रहण किया जाना 10–सामाजिक मूल्यों का अभाव 11–महंगाई 12–समुचित वातावरण का अभाव 13–पृथक धर्म एवं रीति–रिवाज 14–पृथक संस्कृति।
फैशन विशेषज्ञों का मानना है कि सन् 1990 में फैशन का स्वर्णयुग प्रारम्भ हो गया था। आज विश्वभर में प्रचलित फैशन की बानगी भारत में आसनी से देखी जा सकती है। समूचे एशिया में आज भारत फैशन की दुनिया का सिरमौर है। भारत एशिया का सबसे बड़ी 'गारमेण्ट मार्केट' के रुप में भी उभरा है। इसका सम्पूर्ण श्रेय फैशन बाजार में निवेश की जाने वाली पूंजी तथा आर्थिक मामले में निरन्तर देश की सुदृढ़ होती स्थिति को जाता है। आज भारत में फैशन की आँधी पूरे वेग व ताकत से चल रही है। यहाँ हर रोज नया फैशन ईजाद हो रहा है। फैशन को लोग एक रुचिकर व्यवसाय के रुप में लेने लगे हैं। भारतीय परिवेश में शहरी जनता जिस प्रकार तीन वर्गों, उच्च मध्यम तथा निम्न वर्गों में विभाजित है उसी प्रकार ग्रामीण जनसंख्या विभाजित है। प्रत्येक वर्ग का अपनी आय तथा व्यवसाय के अनुसार पहनावा होता है। क्यों कि व्यक्ति के पहनावे और उसकी आय के बीच गहरा सम्बन्ध होता है। अधिकांश ग्रामीण व्यक्ति कृषि पर निर्भर होते हैं।

उनके लिये–ढाले वस्त्र अधिक उपयोगी होते हैं, जिससे उन्हें काम करने में सुविधा होती है। ग्रामीण व्यक्तियों द्वारा धारण किया जाने वाला वस्त्र व्यक्तित्व को सँवारता तो है ही साथ ही उनके कार्यों को करने में सुविधा प्रदान करता है। लोगो के विचार भाव रहन सहन रुचि, परम्परा व संस्कृति एवं संज्ञान के अनुरुप खादी एवं आधुनिक परिधानों का वरण किया जाता है। उपरोक्त के आलोक में ही वर्तमान शोध समस्या को अध्ययनित करने का प्रयास किया गया है।

शोध समस्या :– ग्रामीण परिवेश के युवाओं में खादी परिधान के प्रति जागरुकता का अध्ययन

अध्ययन का क्षेत्र :–प्रस्तुत शोध के अध्ययन एवं उत्तरदाताओं के चयन के लिये अम्बेडकरनगर जनपद की अकबरपुर तहसील अर्न्तगत विकास खण्ड अकबरपुर से सम्बन्धित कुछ ग्राम सभाओं को सम्मिलित किया गया है।

प्रदत्त संकलन : अध्ययन के अन्तर्गत उद्देश्य पूर्ण प्रदत्त संकलन के लिए यादृच्दिक विधि से ग्रामीण परिवेश से कुल 50 व्यक्तियों का चयन किया गया है। जिसमें केवल 18–30 आयु वर्ग के ग्रामीण परिवेश के युवक व युवतियां शामिल है। जिनमें खादी एवं आधुनिक परिधानों के प्रति रुचि एवं जागरुकता को अध्ययनित किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण : प्रस्तुत शोध कार्य के अर्न्तगत प्राप्त आंकड़ों के आधार पर चयनित प्रतिदर्शो की आयु, शिक्षा एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति की समानता के आधार पर चयनित प्रतिदर्शो से प्राप्त प्रदत्तों का विवेचन किया गया है।

सारिणी संख्या 1: ग्रामीण युवाओं में आधुनिक एवं खादी परिधान के प्रति पसन्द

क्र0 सं0	परिधान	संख्या	प्रतिशत
1	आधुनिक परिधान	28	58:
2	खादी परिधान	22	42:
	योग	50	100:

टिप्पणी :– सारणी संख्या–01 से स्पष्ट है कि 58: (ग्रामीण युवाओं की पसन्द आधुनिक परिधान है, जबकि 42: ग्रामीण युवाओं को खादी परिधान पसन्द है।

सारणी संख्या 2: ग्रामीण युवतियों में आधुनिक एवं खादी परिधान के प्रति पसन्द

क्र0सं0	परिधान	संख्या	प्रतिशत
1	आधुनिक परिधान	38	70:
2	खादी परिधान	12	30:
	योग	50	100:

टिप्पणी :– सारणी संख्य–02 से स्पष्ट है कि 70: (ग्रामीण युवतियों की पसन्द आधुनिक परिधान है, जबकि 30: ग्रामीण युवतियों को खादी परिधान पसन्द है।

सारणी संख्या 3: ग्रामीण युवक एवं युवतियो में आधुनिक एवं खादी परिधान के प्रति जागरुकता

		युवक		युवतियां	
क्र0सं0	परिधान	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	आधुनिक परिधान	36	72:	42	84:
2	खादी परिधान	14	28:	08	16:
	योग	50	100	50	100:

टिप्पणी :– उपरोक्त सारणी संख्या –03 से स्पष्ट है कि 72: ग्रामीण युवको के द्वारा आधुनिक परिधान के प्रति रुचि प्रदर्शित की, जबकि 28: ग्रामीण युवको के द्वारा खादी परिधानों के प्रति रुचि दिखलायी। इसी प्रकार 84: ग्रामीण युवतियों के द्वारा आधुनिक परिधान के प्रति रुचि प्रदर्शित की, जबकि 16: ग्रामीण युवतियों के द्वारा खादी परिधानों के प्रति रुचि दिखलायी गयी।

निष्कर्ष एवं सुझाव : आज के समय को देखते हुए हमें यह पता चलता है कि ग्रामीण परिवेश की युवतियां व महिलायें फैशन के प्रति ज्यादा जागरूक है तथा फैशन को अत्यधिक महत्व दे रही है व अपने पहनावे में भारतीय परिधानों के साथ–साथ पश्चिमी परिधानों को भी महत्व दे रही है । 84 प्रतिशत ग्रामीण महिलायें आधुनिक फैशन के प्रति ज्यादा उत्सुक रहती है। वह परिधान पहनने के पश्चात देखने से कैसा लुक देता है। कौन सा परिधान फैशन में आने वाला है। सब बातें रैम्प शो के माध्यम से ही पता चलती है। अतः रैम्प शो फैशन–विस्तार का एक सशक्त माध्यम है। अतः आज फैशन के लिए किसी मंच की आवश्यकता नहीं है। स्कूल या कालेज, बाजार या विभिन्न प्रकार के उत्सव फैशन की अभिव्यक्ति में योगदान दे रहें है। इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि आज फैशन युवाओ की जागरुकता के कारण एक जगह न सिमटकर बल्कि पूरी दुनिया में अपनी पहचान बनाया है। चाहे वो ग्रामीण जनजीवन ही क्यों न हो। या जागरुकता का ही परिणाम हैकि आज किसी भी प्रकार को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने में मिनट नही बल्कि सेकेण्ड लगते है। प्रस्तुत अध्ययन परिणाम भविष्यगत शोध कार्यो के लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. पी0के0आर्य–फैशन डिजाइनिंग, मनोज पॉकेट बुक्स 761, मेन रोड बुराड़ी दिल्ली–110084
2. प्रमिला वर्मा–वस्त्र विज्ञान एवं परिधान, प्रकाशन मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, वान गंगा भोपाल (म0प्र0) 462003
3. डॉ0 शशी प्रभा जैन डॉ0 अजर्चना जैन–वस्त्र एवं परिधान प्रकाशक, श्री गणेश मार्केट खजुरी बाजार इन्दौर–452002
4. सुश्री उषा बाल चन्दानी, श्रीमती दिव्या राय–प्रायोगिक गृहविज्ञान भाग–2 प्रकाशक विजय प्रकाशन मन्दिर सी0के0 15/05 बुलनाला, वाराणसी–221002 संस्करणः 2008ई0